P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-6* February- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत में राष्ट्रीय एकता का विकास एवं महात्मा गांधी

संजय कुमार
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग
राजकीय लोहिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
चूरू,राजस्थान

सारांश

हमारा देश विविधताओं का देश है जिसमें अनेक भाषा धर्म, जाति, समुदाय एवं संस्कृति के लोग निवास करते हैं। देश की यही विविधता देश की एकता में संजोये रखने में महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि इससे देश का चरित्र सहिष्णु प्रकृति का हो गया। विश्व के किसी अन्य राष्ट्र की अपेक्षा भारत में राष्ट्रीय एकता की इच्छाशक्ति अधिक प्रबल रही है जिसमें महात्मा गांधी की भूमिका महत्वपूर्ण रही। वे न केवल जन नेता थे अपितु सर्व वर्ग एवं समुदाय के नेता थे। उन्होंने समस्त भारतीयों में अपने देश के प्रति भक्ति की भावना को संगठित कर स्वाधीनता आन्दोलन को शांतिपूर्ण आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाया तथा अन्य नेताओं के प्रेरणा स्त्रोत बने तथा अपने पूर्वगामी नेताओं यथा राजाराममोहन रॉय, दयानन्द सरस्वती, तिलक, गोखले, मालवीय, विवेकानन्द आदि से प्रेरणा प्राप्त कर 'यंग इंडिया' एवं 'हरिजन' नामक समाचार पत्रों का प्रकाशन किया जिससे भारतीय समुदाय में चेतना का प्रचार–प्रसार हुआ और राष्ट्रीय एकता का स्वरूप निखर कर सामने आया है। इसी दौरान गांधी जी ने स्वाधीनता युद्ध का शंखनाद किया और राष्ट्रीय एकता को आजादी के बाद भी देश के चरित्र में समाहित रखा है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीयता, मानवता, साम्राज्यवाद, धर्मनिरपेक्षता, विविधता।

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी के आरम्भ से पहले भारत में राष्ट्रीय एकता का अभाव था। भारत की विशाल जनसंख्या धर्म, भाषा और राजनीतिक विवादों के आधार पर आपस में बँटी हुई थी। वस्तुतः ये ही वे निर्णायक तत्व थे, जिन्होंने भारतीय भूमि पर अंग्रेजों को साम्राज्यवाद का अवसर दिया। 19वीं शताब्दी से पूर्व भारतीय राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में बहुत सारे पश्चिमी विचारकों का मत अच्छा नहीं था। पश्चिमी विचारकों ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की थी कि–''भारत के विषय में यह समझ लेना आवश्यक है कि न यह कोई देश है और न कभी था–यहां यूरोपीय धारणाओं के अनुकूल भौतिक, राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक एकता है ही नहीं।''[1] यहाँ तक कि सर जॉन सीली ने भी अपने विचारों को प्रकट करते हुए यह कहा था कि ''भारत कोई एक राजनीतिक नाम नहीं है, केवल एक भौगोलिक अभिव्यक्ति है, जैसे कि यूरोप या अफ्रीका। यह किसी देश के क्षेत्रफल या भाषा को संबोधित नहीं करता, बल्कि यह कई राष्ट्रों और भाषाओं की ओर संकेत करता है।''[2] किन्तु भारतीय राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में यूरोपीय परिभाषाओं को पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता। हालांकि ऐसा स्पष्ट है कि 19वीं शताब्दी में राष्ट्रीयता का अभाव देखा गया था और भारत विखंडित था। विभिन्न शक्तियों में एकता का अभाव भी था, किन्तु इसी एकता के अभाव ने भी भारतीय राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया साथ ही यहां समय–समय पर हुए धार्मिक एवं स्वाधीनता आन्दोलन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हमारा देश विविधताओं का देश है जिसमें अनेक भाषा, धर्म, जाति, समुदाय, संस्कृति एवं स्थान के लोग निवास करते हैं। देश की यही विविधता देश की एकता को संजोये रखने में महत्वपूर्ण रही है क्योंकि इनसे देश का चरित्र सहिष्णु प्रकृति का हो गया है। जिस प्रकार समुद्र में अनेक नदियां विलय हो जाती हैं, वैसे ही भारत में अनेक विविधाताओं का समागम हो गया है, इससे भारतीय समाज खण्डित होते हुए भी विभाजित नहीं रहा। विश्व के किसी अन्य राष्ट्र की अपेक्षा भारत में राष्ट्रीय एकता की इच्छा शक्ति अधिक प्रबल रही जिसमे सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में योगदान दिया।

यहाँ सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि राष्ट्रीय एकता का जन्म पराधीनता के दौर में निखर कर सामने आया जब गांधी जी ने स्वाधीनता

आन्दोलन के युद्ध में स्वतंत्र भारत के लिये शंखनाद किया। गांधी जी ने राष्ट्रीय एकता के लिए मानवतावादी सिद्धान्तों का पोषण किया, जिसका लक्ष्य देश सेवा एवं समानता था, उनके प्रमुख साधन सत्य, अहिंसा व सत्याग्रह थे। उनकी अहिंसा की अवधारणा मन, वचन और कर्म से संबंधित है राष्ट्रीय एकता के विषय में गांधी जी ने अहिंसा को अत्यधिक महत्व दिया है।[3]

साहित्यावलोकन

सत्या एम. राय (सम्पादित) : 'भारत में राष्ट्रवाद' (1983), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने देश में स्वाधीनता से पूर्व राष्ट्रीयता के अभाव के कारणों की चर्चा करते हुए लिखा है कि देश में राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता के विकास की प्रक्रिया अत्यन्त जटिल रही है, भारतीय राष्ट्रवाद एवं एकता की पृष्ठभूमि में यह विशेषता रही है कि भारतीय समाज खंडित होते हुए भी इसका स्वरूप विभाजित नहीं रहा है।

अयोध्या सिंह : 'भारत का मुक्ति संग्राम' (1977), लेखक ने अपनी पुस्तक में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के अनेक पहलुओं का विषद विवेचन करते हुए इसके विभिन्न आयामों पर दृष्टिपात किया है, इनका मत है कि भारतीयता कोई एक राजनीतिक नाम नहीं है, यह एक भौगोलिक अभिव्यक्ति है, जैसे कि यूरोपियन या अफ्रीकन।

जेनीफर स्ट्रेन्ड : महात्मा गांधी (2016), पुस्तक में लेखक ने गांधी जी के मानवतावादी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें सर्वमान्य नेतृत्व क्षमता वाला जन नायक एवं शांति दूत बताया है। लेखक के अनुसार गांधी जी एकता के लिए सच्चे अर्थों में जनमानस का प्रतिनिधित्व चाहते थे, उनका मानना था कि अछूतों के बीच हमें अपने को अछूत समझकर रहना चाहिए, जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे तब तक हम सच्चे अर्थों में जनमानस का प्रतिनिधित्व नही कर पाएंगे।

थॉमस मेरटोन : 'गांधी ऑन नॉन वाइलेन्स (2017), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने गांधी जी के अहिंसा सिद्धान्त के व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक पक्ष को दर्शाते हुए अहिंसक दृष्टिकोण को परिभाषित किया है। महात्मा गांधी की अहिंसा संबंधी अवधारणा रूढ़िवादी न होकर प्रगतिशील एवं सकारात्मक है। आज जब पुलिस एवं सेना हिंसा और आतंकवाद को नियन्त्रित करने में विफल हो रही है, अहिंसा सिद्धान्त की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है।

ए. बी.जबोर्ड : दी क्वेफ्ट ऑफ पॉवर (1938), में भारतीय राष्ट्रीयता का जन्म मुख्य रूप से अंग्रेजों की देन है, जैसे तथ्यों एवं दावों को चित्रित किया गया है।

विपिनचन्द्र पाल : मेमोरी ऑफ माई लाईफ एंड टाईम (1932), पुस्तक में ब्रह्म समाज एवं राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध में वैयक्तिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता का नया मंत्र घोषित किया गया। इसमें तत्कालीन सामाजिक इतिहास का व्यावहारिक चित्रण किया गया है।

जे. एन. फर्कूहर : इंडियन इंवाजेलिकल रिव्यू (1892), में लेखक ने भारतीय समाज में विभिन्न विचारकों के महत्व एवं प्रभाव को प्रकट करते हुए, बदलते भारत में नवजागृति के लिए बदलावों के पीछे छिपे तथ्यों को प्रकट किया है।

रोम्या रोलां : विवेकानन्द की जीवनी और सार्वदेशिक उपदेश (1953), में लेखक ने विवेकानन्द के विचार एवं व्यक्तित्व का विस्तृत वर्णन करते हुए लिखा कि विवेकानन्द के सिद्धान्तों और प्रचार के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना जोर पकड़ती गयी।

रोम्या रोलां : दि लाइफ ऑफ रामकृष्ण (1947), पुस्तक में रामकृष्ण परमहंस के सिद्धान्तों एवं विचारों को प्रकट करते हुए इनका भारतीय जनजागृति एवं एकता पर पड़े प्रभावों को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

एस. नटराजन : हिस्ट्री ऑफ प्रेस इन इंडिया (1962) में लेखक ने भारतीय समाचार जगत के इतिहास एवं इनके समाज में नवजागृति लाने की भूमिका का वर्णन किया गया है, प्रेस की आजादी अंग्रेजों के प्रतिबन्धों के बीच राष्ट्रीय एकता, जागृति आदि तथ्यों के सन्दर्भ में विभिन्न घटनाओं का अंकन प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है।

जे. नारायण : हिस्ट्री ऑफ इंडियन जनरलिज्म (1954) में ब्रिटिश सरकार के दौरान समाचार पत्रों पर अंकुश, नियंत्रण आदि तथ्यों के वर्णन के साथ प्रेस एक्ट का उल्लेख भी किया गया है तथा समाचार पत्रों के राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में योगदान को दर्शाया गया है।

महत्व

हमारे समाज में धर्म, राजनीति तथा राष्ट्रीय एकता की पारस्परिक सम्बद्धता सदैव रही है। धर्म राजनीति एवं राष्ट्रीय एकता की सम्बद्धता और पृथक्कता के सम्बन्ध में समय–समय पर परस्पर अनेक विरोधी विचारों का प्रतिपादन हुआ है। अनेक विचारकों ने धर्म के सकारात्मक पक्ष के स्थान पर उसके नकारात्मक पक्ष को धर्म का पर्याय मानकर विचारजनित भ्रान्तियों से अनेक विरोधाभास ही पैदा नहीं किए, अपितु एक दिशाहीन वैचारिक भटकाव को जन्म दिया। आज एक दिग्भ्रमित, विचारशून्य, भारतीय जीवन मूल्यों से अनभिज्ञ पीढ़ी तैयार हो चुकी है जो स्पष्ट जीवन मूल्यों, लक्ष्यों, व आदर्शों के अभाव में पाश्चात्य प्रतिमानों के मुहावरों के रूप में प्रयोग करते हुए इनके सन्दर्भ, देशकाल और परिस्थितियों में इनकी प्रासंगिकता, औचित्य और अर्थ को बिना समझे मनमाना रूप देकर दुरूपयोग कर रही है। इस विचार की सच्चाई से परे कि उनके इन मुहावरों के मनमाने अर्थ व व्याख्या से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को कितनी बड़ी क्षति पहुँच रही है।

अतएवं इस तथ्य पर दृष्टिपात करना आवश्यक है कि भारत में धर्म की वह कौन सी अवधारणा थी, जिसने राजनीति को न केवल नियन्त्रित ही किया, अपितु उसे जनकल्याण का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया तथा इसके विपरीत उसी धर्म के आधार पर राष्ट्रीय एकता को खण्ड खण्ड कर उसका विभाजन तक कर दिया।

राष्ट्रीय एकता महात्मा गांधी के सम्पूर्ण राजनीतिक जीवन की एक महत्वपूर्ण कोशिश कर रही है। उन्होंने अपने आन्दोलनों में भारत की हर जाति, धर्म और सम्प्रदायों के लोगों को सम्मिलित करने का प्रयास किया। उनका यह सन्देश था कि हिन्दू और मुसलमान दोनों ये समझें कि उनका लक्ष्य एक है, उनकी समस्याएं एक हैं

और उन सबका सुख–दुख एक है। महात्मा गांधी ने इस बात पर जोर दिया कि हिन्दू और मुसलमान में एकता से सारे देश का भला होगा। वे चाहते थे कि देश के अल्पसंख्यक किसी भी तरह के भय से पूर्णतया मुक्त रहें, इस हेतु उन्होंने मुसलमानों को उनके खिलाफत आंदोलन में पूर्ण सहयोग दिया ताकि मुसलमान ये महसूस करें कि हिन्दुओं को उनके सुख–दुख की परवाह है। हिन्दू मुस्लिम जनता के अटूट संबंध के जरिये, वे भारत की स्वतंत्रता की कामना एवं सद्प्रयास करते रहे। वे कभी नहीं चाहते थे कि धर्म के नाम पर भारत का विभाजन हो। इस हेतु उन्होंने साम्प्रदायिक नेताओं को अपने तर्कों एवं कर्मों के द्वारा परास्त करने की चेष्टा की। यह सच है कि साम्प्रदायिक तत्वों के अलावा ब्रिटिश सरकार की नीतियों ने उन्हें अपने मिशन में पूर्णतया सफल नहीं होने दिया, तथापि उनके इस प्रयत्न ने, जिस हेतु उन्हें अंततोगत्वा अपने प्राण की आहुति भी देनी पड़ी, सम्पूर्ण भारत में एक ऐसा वैचारिक वर्ग तैयार कर दिया है, जो हिन्दू मुस्लिम एकता के दीप को अनन्त वर्ष तक जलाये रखने में सफल होगा।

महात्मा गांधी की भूमिका राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण रही। वे न केवल जन नेता थे अपितु जनता के अधिकारों के समर्थक नेता थे जिसकी झलक कमजोर, दरिद्र एवं दलित वर्ग के प्रति उनके सम्मान, सद्भाव में दिखाई देती थी। सर्वमान्य एवं सर्व वर्ग समर्थित नेता होने के कारण ही वे देशव्यापी स्वाधीनता संघर्ष को शांतिपूर्ण आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ा सके तथा अन्य नेताओं के प्रेरणा स्त्रोत बन सके।[4]

कुछ विद्वानों का यह विचार कि भारत में राष्ट्रीयता का जन्म मुख्य रूप से अंग्रेजों की देन है, इतिहास को गलत दिशा की ओर मोड़ती है। हालांकि साम्राज्यवादी समर्थकों ने इस बात को दावे के साथ कहा है कि भारतीय राष्ट्रवाद पूर्णतः अंग्रेजों की देन है। रैमजे मेकडोनल्ड जैसे व्यक्ति ने भी इसी विचार का समर्थन किया है।[5] उन साम्राज्यवादी समर्थकों ने यहां तक कहा है कि– ''भारतीय जनता का राजनीतिक मनोवृति वाला हिस्सा बौद्धिक दृष्टि से हमारी संतान है। उन्होंने उन विचारों को ग्रहण किया जिन्हें स्वयं हमने उनके सामने रखा। भारत की वर्तमान बौद्धिक एवं नैतिक हलचल हमारे कार्य की निन्दा नहीं बल्कि प्रशंसा की बात है।''[6]

भारत में गांधी से पूर्व राष्ट्रीय एकता के विकास की प्रक्रिया अत्यन्त धीमी एवं जटिल रही है, सन् 1857 में पहली बार भारत में अंग्रेजों को बाहर निकालने के लिए संगठित विद्रोह हुआ, जिसमें राष्ट्रीयता की झलक दिखलाई पड़ती है। हालांकि अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबा दिया तथापि सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से इसके परिणाम बहुत ही दूरगामी साबित हुए। 1857 के बाद जहाँ ब्रिटिश सरकार ने भारत में अपनी नीति को उदार बनाया वहीं भारतीय मध्यम वर्ग द्वारा अनेक सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक सुधारों की मांग की गई। वस्तुतः राष्ट्रवाद के विकास में 1857 की घटना सबसे महत्वपूर्ण बात थी।

भारत में नवजागृति और समाज सुधार की दृष्टि से राममोहन राय का स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने ब्रह्म समाज का गठन किया, वह उनके तर्कवादी दृष्टिकोण पर आधारित था। राष्ट्रीयता के विकास में ब्रह्म समाज का जो महत्वपूर्ण स्थान था उसके संबंध में विपिनचन्द्र पाल ने कहा है–''ब्रह्म समाज ने वैयक्तिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता का नया मंत्र घोषित किया था, जिससे हमारी शिशु राष्ट्रीयता की भावना और तरूण बंगाल के नये राजनीतिक जीवन एवं आकांक्षाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। अपने अंग्रेज प्रभुओं की श्रेष्ठता को स्वीकार करने की जगह, हमारे शिक्षित देशवासियों में एक नया आत्मविश्वास दिखलाई पड़ा।''[7]

भारत में नव जागृति लाने में स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी। 1875 ई. में उन्होंने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की, जिसकी शाखायें उत्तरी भारत के पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा बिहार में फैली हुई थीं। स्वयं दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। आर्यसमाज के द्वारा जाति प्रथा को समाप्त करना, बाल विवाह का प्रचलन बन्द करना, विधवा विवाह को सामाजिक स्थान देना तथा गोरक्षा करना महत्वपूर्ण कार्यक्रम माना गया। वस्तुतः 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज को अंधकार से प्रकाश में लाने का श्रेय दयानन्द सरस्वती को ही जाता है। दयानन्द के आदर्श को न सिर्फ भारत बल्कि पश्चिमी राष्ट्रों ने भी सम्मानित किया। एक अंग्रेज पादरी डॉ. ग्रिसवर्ल्ड ने इसकी सराहना करते हुए कहा–''इन सारी बातों से प्रकट है कि स्वामी दयानंद सरस्वती बहुत उदार विचारों के व्यक्ति थे। वह बहुत सुन्दर स्वप्नों के द्रष्टा थे। वह ऐसे भारत का स्वप्न देखते थे, जो कुसंस्कार से शुद्ध हो, विज्ञान से पूरा लाभ उठाये, एक ईश्वर की पूजा करे, आत्मशासित हो और दुनिया के राष्ट्रों में उचित स्थान मिले तथा प्राचीन गौरव का पुनरूद्धार हो।''[8]

भारत में नवजागृति के लिए रामकृष्ण परमहंस तथा उनके प्रिय शिष्य विवेकानन्द का योगदान महत्वपूर्ण रहा। विवेकानन्द के शब्दों में–''वे बाहर से भक्त थे, पर भीतर से ज्ञानी थे।''[9] रामकृष्ण परमहंस के सिद्धान्तों एवं विचारों को भारत तथा विश्व में फैलाने का श्रेय विवेकानन्द
को है।

उन्होंने शिक्षित भारतीयों को चेतावनी देते हुए कहा था–''जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञान के गोते खा रहे हैं तब तक मैं हर आदमी को एक विश्वासघातक मानता हूँ जिसमें उनकी गाढ़ी कमाई के पैसे से शिक्षा पाई है और अब उन्हीं पर कोई ध्यान नहीं देता।''[10]

राष्ट्रीय एकता के लिए विभिन्न संगठनों जैसे ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन, अलीगढ़ आंदोलन तथा तत्कालीन नेतृत्व जैसे तिलक, गोखले, मालवीय, गांधी और अन्य लोगों ने सभी वर्गों के लिए ऐसी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिनसे देश में चारों ओर शिक्षा का प्रसार हुआ और राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। लेकिन दूसरी तरफ भारतीय आलोचकों ने भारतीय जनता की सम्पूर्णतः सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रगति के लिए परिमाणिक विस्तार के महत्व पर जोर दिया। उनके अनुसर जरूरत इस बात की थी कि गुण के नाम पर शिक्षा को सीमित न किया जाए, वरन् स्वेच्छा के आधार

पर उच्च शिक्षा का तीव्र विकास हो और जन साधारण के लिए धर्म आधारित अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध हो। राष्ट्र की एकता को सशक्त करने के उद्देश्य से 1919 में गांधी ने 'यंग इंडिया' का संपादन किया और इसके माध्यम से अपने राजनीतिक दर्शन, कार्यक्रम और नीतियों का प्रचार किया। 1933 के बाद उन्होंने 'हरिजन' (अंग्रेजी, हिन्दी और कई अन्य देशी भाषाओं में प्रकाशित साप्ताहिक) का भी प्रकाश शुरू किया।[11]

भारतीय राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता के विकास में समाचार पत्रों ने कारगर हथियार का काम किया। ब्रिटिश सरकार भारतीय राष्ट्रीयता की मांग को पूरा नहीं करना चाहती थी, इसलिए समाचार पत्रों पर अंकुश लगाए रखना चाहती थी। अंग्रेजी सरकार को कई प्रेस एक्ट बनाने पड़े, इसी से यह सिद्ध होता है कि समाचार पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहे थे।[12]

गांधी जी ने प्रेस की स्वतंत्रता को कम करने की सारी सरकारी कार्यवाहियों का हरदम विरोध किया। प्रेस की स्वतंत्रता का संघर्ष राष्ट्रीय आंदोलन का अनिवार्य अंग था। राजा राममोहन राय और उनके सहयोगी, भारतीय राष्ट्रवाद के अन्य अग्रणी नेताओं, उदारवादियों गांधी इंडियन नेशनल कांग्रेस, समाजवादियों, साम्यवादियों छात्र संगठनों, मजदूर और किसान सभाओं और आल इंडिया सिविल लिबर्टीज यूनियन आदि विभिन्न दलों और संगठनों ने भी प्रेस की स्वतंत्रता को कम करने वाले सरकारी कार्यों की तीव्र आलोचना की।

महात्मा गांधी ने व्यापक पैमाने पर सामाजिक कुरीतियों पर भी हमला कर सुधारवादी दलों की मदद की। जाति, बाल विवाह, विधवा विवाह तथा वे सामाजिक, न्यायिक और अन्य प्रकार की असमानताएं जिनकी औरतें शिकार थीं, का भी गांधी ने विरोध किया। छुआछूत के खिलाफ प्रचार, समाज के जनतांत्रिक पुनर्निर्माण के सिद्धान्त और कार्यक्रम से साधारण जन को अवगत कराने में उनका सहयोग प्राप्त हुआ।

1918 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद भारतीयों को यह उम्मीद थी कि ब्रिटेन के द्वारा उनके लिए उदारवादी शासन को आरम्भ किया जायेगा। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीयों ने ब्रिटेन की जी जान से मदद की थी। महात्मा गांधी का भी कुछ ऐसा ही विचार था। किन्तु भारतीय राष्ट्रवादियों को उस समय अत्यन्त ही गहरा झटका लगा जब 1919 ई. में रॉलेट एक्ट की घोषणा की गई। जो महात्मा गांधी 1918 तक ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थक एवं प्रशंसक थे, वह इस एक्ट की घोषणा के साथ ही उसके जबर्दस्त विरोधी हो गये। 1919 ई. में ही रॉलेट एक्ट का पूरे भारत में विरोध हुआ, दूसरी ओर सेव्र की सन्धि ने टर्की में सुल्तान के अस्तित्व को खतरा पहुंचाया था। अतः भारतीय मुसलमानों में ब्रिटिश राज्य के विरूद्ध खिलाफत आंदोलन शुरू किया। महात्मा गांधी इन परिस्थितियों का सूक्ष्म रूप से निरीक्षण कर रहे थे। उनके मन में एक नये आंदोलन का आरम्भ करने का विचार उभर चुका था। मुसलमानों की सहानुभूति प्राप्त करने का तथा हिन्दू मुस्लिम एकता को सुदृढ़ करने का यह एक सुनहरा अवसर था।

गांधी जी ने इसी दौरान कांग्रेस पर खिलाफत आन्दोलन को स्वीकार करने का दवाब डाला। उनका कहन था कि यदि समाज में रहने वाले नागरिक एक–दूसरे के सुख–दुख में भागीदार न बने तो समाज का कोई अर्थ नहीं होता। ठीक इसी समय गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन को जन्म देकर राष्ट्रीय एकता के विचार को एक नया मार्ग प्रदान किया एवं हिन्दू मुस्लिम एकता की नींव को मजबूत कर भारत को स्वतंत्रता दिलाने की दृष्टि से खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन को साथ–साथ चलाया। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम एकता का ऐसा चमत्कार सिद्ध किया कि कांग्रेस जिस पण्डाल पर अपनी सभा आयोजित करती थी उसी पर खिलाफत सभा भी आयोजित हुआ करती थी।

गांधी जी ने 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का प्रारंभ किया। इस आन्दोलन के साथ ही भारतीय समुदाय गांधी जी के साथ आ गये जो एकता के सूत्र में बंधकर ब्रिटिश राज्य के विरोधी हो गये। इस आन्दोलन ने भारतीयों में एकता की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया। इसी क्रम को जारी रखते हुए 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन को शुरू किया। जिसमें भारतीय जन समुदाय ने गांधी को भरपूर समर्थन दिया। गांधी जी ने भारतीय जनता को एकजुट करने में योगदान दिया तथा भारत को शांतिपूर्ण साधन से आजादी की स्वर्णिम सवेरे में प्रवेश करवाने में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हुए राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाधें रखा और जीवन पर्यन्त राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिये कार्य किया।

निष्कर्ष

वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को मध्य नजर रखते हुए भारतीय राष्ट्रीय एकता को चिरकालीन बनाये रखने के लिये यदि कोई उम्मीद की किरण नजर आती है तो वह गांधी जी की विचारधारा ही है भारत के विभिन्न धार्मिक समुदाय के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने के उद्देश्य से धर्म–निरपेक्ष राष्ट्रीय एकता की नींव रखी एवं वे जीवन पर्यन्त इस सिद्धान्त पर चलते रहे। उनका कहना था कि ''जो लोग यहां पैदा हुए हैं और जिनकी निष्ठा किसी अन्य देश में नहीं है, ऐसे सभी लोगों का भारत देश है। इसलिये भारत जितना हिन्दुओं का है, उतना ही पारसियों का, ईसाइयों का, हिन्दु ईसाइयों का, मुसलमानों का तथा अन्य सभी गैर हिन्दुओं का है। स्वतंत्र भारत का राज्य 'हिन्दू राज्य' नहीं, भारतीय राज्य कहलायेगा। यह राज्य किसी धर्म–पंथ या जाति के प्रतिनिधियों का नहीं होगा।''

गांधी जी का उद्देश्य राष्ट्र में संकीर्णता, स्वार्थ और एकाकीपन की भावनाएँ दूर करने का रहा जिनसे आज भी राष्ट्र ग्रसित है। इन बुराईयों को दूर करने के लिये सर्वोदय समाज की स्थापना करने का निरन्तर प्रयास किया। गांधी जी के सर्वोदय समाज में सभी सदस्य समान होंगे। सबल व्यक्ति समाज के निर्बल व्यक्तियों की रक्षा करेंगे। इसी मूलमंत्र को प्रत्येक व्यक्ति जीवन में धारण कर राष्ट्रीय एकता को चिरस्थायी बनाने में अपना योगदान दे सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *सत्या एम. राय (सम्पादित) 'भारत में राष्ट्रवाद, हिन्दी माध्यम निदेशालय',दिल्ली, 1983,पृ. 11*
2. *अयोध्या सिंह, 'भारत का मुक्ति संग्राम', नई दिल्ली, 1977, पृ. 6*
3. *जेनीफर स्ट्रेन्ड, 'महात्मा गांधी', एब्दो जूम पब्लिशर्स, 2016, पृ. 29*
4. *थॉमस मेरटोन,'गांधी ऑन नॉन वाइलेन्स' न्यू, डाइरेक्सन पब्लिकेशन, 2017, पृ. 23*
5. *ए. वीजबोर्ड, 'दी क्वेफ्ट ऑफ पॉवर', लंदन, 1938, पृ. 179*
6. *सत्या एम. राय., पूर्वोलिखित, पृ. 2*
7. *विपिनचन्द्र पाल, मेमोरीज ऑफ माई लाइफ एंड टाइम, मॉडर्न बुक एजेन्सी, 1932, पृ. 229*
8. *जे. एन. फर्कूहर द्वारा उद्धृत 'इंडियन इंवाजेलिकल रिव्यू', 1892, पृ. 112*
9. *रोम्या रोलां, 'दि लाइफ ऑफ रामकृष्ण', मूल फ्रांसीसी के अनुवादक : डॉ. मेलकम स्मिथ अद्वैत आश्रम, मायावती, अल्मोड़ा, 1947, पृ. 84*
10. *रोम्या रोलां, 'विवेकानन्द की जीवनी और सार्वदेशिक उपदेश', मूल फ्रांसीसी से अनुवादक : मैलकम स्मिथ, मायावती, अल्मोड़ा, 1953, पृ. 70*
11. *एस. नटराजन, 'हिस्ट्री ऑफ प्रेस इन इंडिया', एशिया पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई, 1962, पृ. 313–314*
12. *जे. नारायण, 'हिस्ट्री ऑफ इंडियन जनरलिज्म', गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 1954, पृ. 335*